No. of Printed Pages : 4

ई.एच.डी.-1

स्नातक उपाधि कार्यक्रम

08225

सत्रांत परीक्षा
दिसम्बर, 2010

ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी

ई.एच.डी.-1 : हिन्दी गद्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। पहला प्रश्न **अनिवार्य** है।*

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से ***किन्हीं तीन*** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **12x3=36**

(क) इधर देश की राजनीतिक दशा भयंकर होती जा रही थी। कंपनी की फौजें लखनऊ की तरफ बढ़ी चली आती थीं। शहर में हलचल मची हुई थी। लोग बाल-बच्चों को लेकर देहातों में भाग रहे थे। पर हमारे दोनों खिलाड़ियों को इसकी जरा भी फिक्र न थी। वे घर से आते तो गलियों में होकर। डर था कि कहीं किसी बादशाही मुलाजिम की निगाह न पड़ जाए, जो बेगार में पकड़े जाएं। हजारों रुपये सालाना की जागीर मुफ्त हजम करना चाहते थे।

(ख) उस दिन से निर्मला का रंग-ढंग बदलने लगा। उसने अपने को कर्त्तव्य पर मिटा देने का निश्चय कर लिया। अब तक नैराश्य के संताप में उसने कर्त्तव्य पर ध्यान ही न दिया था। उसके हृदय में विप्लव की ज्वाला-सी दहकती रहती थी, जिसकी असह्य वेदना ने उसे संज्ञाहीन-सा कर रखा था। अब उस वेदना का वेग शांत होने लगा। उसे ज्ञात हुआ कि मेरे लिए जीवन का कोई आनंद नहीं। उसका स्वप्न देखकर क्यों इस जीवन को नष्ट करूँ? संसार में सब-के-सब प्राणी सुख-सेज़ पर तो नहीं सोते? मैं भी उन्हीं अभागों में हूँ।

(ग) मैं जानती हूँ माँ-बेटे के संबंध से बढ़कर कोई संबंध नहीं है। पर पति से बढ़कर पत्नी के लिए भी और कुछ नहीं है, पति भी वह जिसके लिए उसने समाज की ही नहीं वरन् अपने हृदय की साक्षी दी है; जिसे वह प्यार करती है। उसके कहने पर वह प्राण दे सकती है, परंतु उसको दु:खी करके वह किसी को सुखी करने की कल्पना नहीं कर सकती।

(घ) मेरी रक्षा करो। मेरे और अपने गौरव की रक्षा करो। राजा, आज मैं शरण की प्रार्थिनी हूँ। मैं स्वीकार करती हूँ कि आज तक मैं तुम्हारे विलास की सहचरी नहीं हुई; किंतु वह मेरा अहंकार चूर्ण हो गया है। मैं तुम्हारी होकर रहूँगी। राज्य और संपत्ति रहने पर राजा-पुरुष को बहुत-सी रानियाँ और स्त्रियाँ मिलती हैं; किंतु व्यक्ति का मान नष्ट होने पर फिर नहीं मिलता।

(ङ) जीवन का उद्देश्य क्या है? क्या वह भविष्य के लिए आयोजन का स्थान नहीं? क्या वह तुम्हारे हाथ सौंपा हुआ ऐसा पदार्थ नहीं है जिसका लेखा तुम्हें परमात्मा को और अपनी आत्मा को देना होगा? सोचो तो कि दो, चार, दस जितने गुण तुम्हें दिए गए हैं, उन्हें तुम्हें देने वाले को पचास गुने, सौगुने करके लौटाना चाहिए, अथवा ज्यों के त्यों बिना ब्याज व वृद्धि के।

2. 'निर्मला' की कथावस्तु का सार-संक्षेप में लिखिए। 16

3. 'आकाश-दीप' कहानी के द्वारा प्रसाद क्या कहना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए। 16

4. रंगमंच और संरचना-शिल्प की दृष्टि से 'ध्रुवस्वामिनी' का मूल्यांकन कीजिए। 16

5. 'कौमुदी-महोत्सव' एकांकी नाटक की कथावस्तु का विश्लेषण करते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। 16

6. ललित निबंध की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध का विवेचन कीजिए। 16

7. हिन्दी कहानी के विकास का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए। 16

8. हिन्दी गद्य की कथेतर विधाओं की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 16

9. निम्नलिखित में से ***किन्हीं दो*** पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 8x2=16

(क) नयी कहानी

(ख) 'शतरंज के खिलाड़ी' का प्रतिपाद्य

(ग) 'ध्रुवस्वामिनी' की भाषा

(घ) भारतेंदु युग के नाटक